an>

title: Need to undertake excavation of places of archaeological importance in Nalanda and other places in Bihar.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) ः मेरे संसदीय क्षेत्र नालन्दा में पुरातत्व विभाग द्वारा कई ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई एवं उत्खनन का कार्य पिछले कई वर्षों से चल रहा है। बिहार के कई अन्य ऐतिहासिक स्थलों पर भी पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई हो रही है। बिहार में ये सभी स्थल इतिहास की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। किंतु दुर्भाग्य की बात है कि विगत कुछ महीनों से केंद्र सरकार ने इन सभी स्थलों की खुदाई पर रोक लगा दी है। जबकि नालंदा अंतर्गत वण्डी प्रखंड के रूखाई गांव में पुरातत्व विभाग ने खुदाई के दौरान तीन हजार वर्ष पुराने इतिहास का पता लगाया है। खुदाई के दौरान मिले अवशेष में जो मिट्टी के बर्तन मिले हैं, उससे पता चला है कि यह बर्तन तकरीबन तीन हज़ार वर्ष पुराना है। बी.एच.यू. के पुरातत्वविद् अपनी पूरी टीम के साथ बौद्धकाल से पूर्व की सभ्यता, संस्कृति एवं रहन-सहन को जानने के लिए वहां पहुंचे थे। खुदाई में जो बर्तन मिले हैं, उससे यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि इस गांव का इतिहास 25 सौ वर्ष पूर्व का रहा होगा। अभी तो सिर्फ मिट्टी के बर्तन से अनुमान लगाया जा रहा है। यदि ठीक से खुदाई की जाए तो तीन हजार या उससे पहले का भी इतिहास सामने आ सकता है। पुरातत्वविद् द्वारा खुदाई में मिले अवशेष से यह भी जानने की कोशिश की जा रही है कि बुद्धकाल में लोगों का रहन-सहन व खान-पान किस प्रकार के थे। माउंट पर बने घर के लोगों क पास जो तांबे का सिक्का मिला है, वह मुगलकाल का है। जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि मध्यकाल में यह स्थल वीरान हुआ है। यहां पर स्थित कुएं को देखकर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि पहली परत की इंट कुषाणकाल की है, जबकि दूसरी परत इंट तुषाणकाल की है। गांव में रखी मूर्तियां पाल काल की प्रतीत होती है, जो 9वीं एवं 10वीं शताब्दी का होना प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त, बी.एच.यू. के पुरातत्वविद् ने रिंगवेल का भी पता लगाया है, जिससे यह प्रतीत होता है कि यह जगह छः सौ ईसा पूर्व एक विकसित नगर रहा होगा।

केंद्र सरकार से मेरा आग्रह है कि नालंदा एवं बिहार के अन्य ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों में पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई एवं उत्खनन का कार्य, जो रोक दिया गया है, उसे पुनः शुरू कराया जाये और पुरातत्व विभाग का एक स्थायी कार्यालय नालंदा में खोला जाए, जिसकी निगरानी में सतत् कार्य चलता रहे। साथ ही नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेषों को विश्व धरोहर के रूप में शामिल करने के सभी उपाय सरकार जल्द से जल्द सुनिश्चित करे क्योंकि इन प्रक्रियाओं से नालंदा के इतिहास को विश्व मंच पर स्थापित करने में सहायता मिलेगी। नालंदा के तेलहारा में हुई खुदाई से एक और विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक विश्वविद्यालय के अवशेष प्राप्त हुए हैं वहां भी कार्य तेज किया जाये। धन्यवाद।